

DR. R. SATHYANARAYANA

Dr. R. Sathyanarayana is an internationally acclaimed authority on Indian music and dancing. He is broad-based in several physical sciences, humanistic and indological disciplines. He is widely acclaimed for his systematic contributions in the intra-disciplinal and inter-disciplinal bases of modern Indian musicology and danceology. He has published numerous books, including critical editions, translations, commentaries, annotations, monographs, original creative works, and research papers on Indian music, dancing and other cognate subjects. He has received numerous academic distinctions (including doctoral degrees, fellowships, and honorific titles) awards and honors. His publications are acclaimed as the most authentic works on Indian musicology and Danceology. He is a profound scholar in many physical sciences, humanistic disciplines and Indological Shastras. He is both a scientist and an artist of highest caliber.

2. Dr. Sathyanarayana was born in Mysore (Karnataka State, India) on May 9th 1927. He belongs to the lineage of the Saint Composer Sri. Tyagaraja. He hails from a family of several generations of artists and scholars. His paternal grandfather was Pallavi Ramalingayya, famed for extempore composing and singing of intricate pallavis in the 108 Desi Talas and who later studied for some time with Manambuchavadi Venkatasubbayya, senior disciple of the Saint Composer. His father was Musician B.Ramaiah. He started learning music from his fifth year from his mother Smt. Varalakshmi who was the foremost disciple of Veena Sundarashastri of the Mysore Royal Court fame.

3. Dr. Sathyanarayana's works are treasured in innumerable Universities in India, West and European countries. His disciples are spread all over the world practicing Indology and Srividya Tantra. Many Music and Dance Institutions are established based on his counselling and many tantric temples are built in our country and around the world based on his works. Sri Sathanarayana is celebrated as a source–book creator for the century in Indian Music, Dancing and cognate Indological disciplines.

4. Dr. Sathyanarayana has endeavored all his life of Ninety one years silently and ceaselessly integrating art with culture by funneling all cognate areas of sciences, shastras and Indological discipline. He has enriched Indian music and culture through reciprocal reactions and responses. The sum of all his works are an inspiration for future generation scholars and artists. His works are contemporary musicological and danceological texts based on which many generations of scholars will use and propagate and is accepted as the standard that should be honored and emulated for research and practice of these arts in India and abroad. He has dedicated his entire life for Indian Music and Dance in its theory and practice. He is an eminent person who has upheld Indian culture, never aspired for any fruits for his toils and always brought all cognate disciplines into Indian Music and Dance to portray to the world its worthy essence. The artist community of our country has benefited from his works. Premier Institutions of Music and Dance are founded based on his works and consultations. Tantrik temples are built and reformed based on his works on Tantra in India and abroad. He has funneled all his resources into the service of society without distinctions of cast and creed. He is adept in Vedic learning, the Darshanas and the Tantra Shastras. He is a venerated guru in Srividya Tantra. He is a unique synthesis of diverse sources, resources and achievements all of which have a single focus: service to humanity. An intense patriot, he served as a volunteer fighter in the freedom struggle of India, and was determined to seek no political, economic or other rewards.

5. Dr. Sathyanarayana's services to Indian culture are known and honored throughout India and abroad. His pioneering contributions to the research and development of Indian music and dancing in many areas have gained national and inter-national recognition and acceptance. He is a source of inspiration and beacon light for the students and scholars of musicology and danceology in India and abroad. He is the recipient of numerous awards and honours. He has been conferred honorary doctorate degree by several well-known universities in India. To list a few of these : D.Litt. First interdisciplinary award, Mysore University, D.Litt. {Honoris Causa} IKSV University, Khairagarh, M.P. D.Litt from KSGH Music and Performing Arts University, Mysore, Indira Gandhi National Fellowship for Arts, Certificate of Honour: International Biographical Centre, Cambridge. Golden Jubilee Award, Mysore University, for highest creative research in Fine Arts and Languages {three times} Fellow, Member etc. of numerous learned bodies in India and Abroad.

6. The awards and citations of Dr. Sathyanarayana include: Academi Rathna fellowship award by Sangit Natak Academi, New Delhi. Rajya Sangita Vidwan Award from Government of Karnataka, 2011, Sahitya Academy Centenary Award, Bangalore. 2015, Madras Music Academy, Chennai, Musicologist Award, Sangit Natak Academy Award for the Year 2008, Karnataka State Rajyotsava Award Veena Rajarao International Award for Excellence in Music, Karnataka Sangeetha Nrutya Academy Award etc.



डॉ. आर. सत्यनारायण

डॉ. आर. सत्यनारायण भारतीय संगीत और नृत्यकला में अंतरराष्ट्रीय स्तर की सम्मानीय हस्ती हैं। आप भौतिक विज्ञान, मानविकी तथा भारतीय विद्या की विभिन्न विधाओं के वैविध्यपूर्ण ज्ञाता हैं। आपको व्यापक रूप से आधुनिक भारतीय संगीत शास्त्र और नृत्यशास्त्र की अंत: विषयक तथा अंतर्विषयक आधारिक संरचना में आपके नियमित योगदान के लिए जाना जाता है। आपने कई पुस्तकों का प्रकाशन किया है जिनमें आलोचनात्मक संस्करण, अनुवाद, कमेंट्री, टिप्पणियां, मोनोग्राफ, मौलिक रचनात्मक कार्य और भारतीय संगीत तथा नृत्यकला पर शोध-पत्र और अन्य सदृश विषय शामिल हैं। आपको कई शैक्षिक सम्मान (जिसमें विद्यावाचस्पति, अध्येतावृत्ति तथा सम्मानसूचक पदवियां शामिल हैं), पुरस्कार तथा उपाधियां प्राप्त हुईं। आपके प्रकाशन कार्यों को, भारतीय संगीत शास्त्र तथा नृत्य शास्त्र में किए गए सबसे अधिक प्रामाणिक कार्य के रूप में जाना गया। आप कई भौतिकीय शास्त्रों, मानविकी विधाओं तथा भारतीय विद्या शास्त्रों के प्रकांड विद्वान हैं। आप उच्चतम योग्यता प्राप्त वैज्ञानिक तथा कलाकार हैं।

2. आपका जन्म 9 मई 1927 को मैसूर (कर्नाटक राज्य, भारत) में हुआ। आप महान संगीतकार श्री त्यागराज के वंशज हैं। आप कलाकारों और विद्वानों की कई पीढ़ियों वाले परिवार से आते हैं। आपके दादा पल्लवी रामालिंगया, आशु रचना तथा 108 देसी तल्ला में जटिल पल्लवी गायन के लिए प्रसिद्ध थे और जिन्होंने बाद में मनमबुछाववदी वैंक्टासुब्बया के साथ कुछ समय तक अध्ययन किया जो कि महान संगीतकार के वरिष्ठ शिष्य थे। आपके पिता बी. रमइया एक संगीतकार थे। आपने पांच वर्ष की आयु से अपनी मां श्रीमती वरलक्ष्मी से संगीत सीखना आरंभ किया जो कि मैसूर के शाही दरबार की सुप्रसिद्ध वीणा सुंदरशास्त्री की श्रेष्ठतम अनुयायी थीं।

3. आपके कार्य को भारत, पश्चिमी तथा यूरोपीय देशों के कई विश्वविद्यालयों में संग्रहीत किया गया है। आपके अनुयायी सारी दुनिया में फैले हुए हैं और भारतीय विद्या और श्रीविद्या तंत्र के अभ्यास में लगे हुए हैं। संगीत तथा नृत्य के कई संस्थान आपके परामर्श से स्थापित किए गए तथा हमारे देश तथा सारे विश्वभर में आपके कार्य के आधार पर कई तांत्रिक मंदिरों का निर्माण किया गया। आप भारतीय संगीत, नृत्य संबंधी भारतीय विद्या की विधाओं के लिए इस सदी के स्त्रोत पुस्तक निर्माता के रूप में सुप्रसिद्ध हैं।

4. आपने अपने जीवन के इक्यानवे वर्ष, शांतिपूर्ण तरीके से और निरंतर विज्ञान के सभी संबंधित क्षेत्रों, शास्त्रों और भारतीय विद्या की विधाओं को संग्रहीत करके कला को संस्कृति के साथ एकीकृत करने के प्रयास में लगा दिए। आपने भारतीय संगीत और संस्कृति को पारस्परिक प्रभावों तथा प्रतिक्रियाओं के माध्यम से समृद्ध बनाया है। आपके द्वारा किया गया समग्र कार्य भविष्य की पीढ़ी के विद्वानों और कलाकारों के लिए प्रेरणा स्रोत है। आपके कार्य आधुनिक संगीतशास्त्र तथा नृत्यशास्त्र के सूत्र हैं जिनको आधार बनाकर विद्वानों की कई पीढ़ियां इन्हें प्रयोग करेंगी और इसका विस्तार करेंगी साथ ही इन्हें आदर्श के रूप में स्वीकार किया गया है जो कि सम्मानीय है और भारत तथा विदेशों में इन कलाओं के शोध तथा अभ्यास के लिए इनका अनुकरण किया जाता है। आपने अपना संपूर्ण जीवन भारतीय संगीत तथा नृत्य के सिद्धांतों और अभ्यास के लिए समर्पित कर दिया है। आप एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं जिन्होंने भारतीय संस्कृति का उत्थान किया। आपने अपने कठिन परिश्रम के लिए किसी भी लाभ की चाह कभी नहीं रखी। आपने सदैव सभी संबंधित विधाओं को भारतीय संगीत तथा नृत्य में शामिल किया और विश्व के सामने इनके बहुमूल्य तत्वों को प्रस्तुत किया। हमारे देश के कलाकार वर्ग आपके कार्य से लाभान्वित हुए हैं। संगीत तथा नृत्य के प्रमुख संस्थानों की स्थापना आपके कार्य और परामर्श के आधार पर की गई। भारत तथा विदेशों में आपके तंत्र पर किए गए कार्य के आधार पर तांत्रिक मंदिरों का निर्माण तथा सुधार किया गया। आपने जाति और वर्ग के भेदभाव के बिना समाज की सेवा के लिए अपने समस्त संसाधन लगा दिए। आप वैदिक शिक्षा, दर्शन तथा तंत्र शास्त्र में दक्ष हैं। आप श्रीविद्या तंत्र के आदरणीय गुरू हैं। आप विविध स्रोतों, संसाधनों तथा उपलब्धियों का अनुपम संयोग हैं जिसका एकमात्र ध्येय है : मानवता की सेवा। आप एक सच्चे देशभक्त हैं। आपने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में स्वैच्छिक सेनानी के रूप में सेवाएं दी और आप कोई भी राजनैतिक, आर्थिक या अन्य लाभ न लेने के लिए दृढ़संकल्पी रहे।

5. भारतीय संस्कृति को दी गई आपकी सेवाएं भारत तथा विदेशों में प्रसिद्ध तथा सम्मानित हैं। कई क्षेत्रों में भारतीय संगीत तथा नृत्य के शोध तथा विकास में आपके अनुसंधानात्मक योगदान को राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय पहचान और स्वीकृति मिली है। भारत तथा विदेशों में संगीतशास्त्र तथा नृत्यशास्त्र के छात्रों और विद्वानों के लिए आप प्रेरणास्त्रोत तथा प्रकाश स्तम्भ हैं। आपको कई पुरस्कार तथा सम्मान प्राप्त हुए हैं। आपको भारत के कई बहुप्रसिद्ध विश्वविद्यालयों से मानद विद्यावाचस्पति डिग्री प्रदान की गई। इनमें से कुछ इस प्रकार है:- डी.लिट.प्रथम अंतर्विषयक पुरस्कार, मैसूर विश्वविद्यालय, डी.लिट. {आनॉरिस कॉसा} आई के एस वी विश्वविद्यालय, खैरगढ़, मध्य प्रदेश, के एस जी एच म्यूजिक एंड प्रफार्मिंग आर्टस् विश्वविद्यालय मैसूर से डी.लिट., इंदिरा गांधी नेशनल फैलोशिप फॉर आर्टस, सर्टिफिकेट ऑफ ऑनर :इंटरनेशनल बायोग्राफिकल सेंटर, केम्ब्रिज। गोल्डन जुबली अवार्ड, मैसूर विश्वविद्यालय, ललित कला तथा भाषा के क्षेत्र में उच्चतम रचनात्मक शोध {तीन बार} के लिए फैलो, भारत तथा विदेशों के कई विद्वतापूर्ण निकायों के सदस्य इत्यादि।

6. आपके पुरस्कारों तथा प्रशस्ति पत्रों में शामिल हैं:- संघ नाटक अकादमी, नई दिल्ली द्वारा अकादमी रत्न फेलोशिप अवार्ड; 2011 में कर्नाटक सरकार द्वारा संगीत विद्वान अवार्ड, 2015 में साहित्य अकादमी शताब्दी पुरस्कार, बेंगलुरू, मद्रास संगीत अकादमी, चैन्ने, म्यूजिकालॉजिस्ट अवार्ड, वर्ष 2008 में संघ नाटक अकादमी पुरस्कार, कर्नाटक राज्य राज्योत्सव पुरस्कार, संगीत में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए वीणा राजाराव इंटरनेशनल अवार्ड, कर्नाटक संगीत नृत्य अकादमी पुरस्कार इत्यादि।